श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ५

अक्तुबर 2019

प्रश्न - पत्र

गुणांक - १००

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ६. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. इन्द्र .... सूत्र से अरिहंतोकी स्तवना करते हैं।
२. अचल केवली को .... राजा ने प्रश्न पूछा मैं भवि हुं या अभवि ?
३. संसार में से छूटने के लिये जयणा और .... चाहिये।
४. .... गुण आ जाये तो लोगों के झुंड के झुंड स्वयंमेव प्रशंसा करने लगते है।
५. आठों आठ कर्म को गहण करने वाली क्रिया .... है।
६. धनरुपी काष्ट को जलाने में ....अग्नि समान है।
७. दूसरों को अच्छी न लगे ऐसी चलने की कुलक्षणी रीत वो .... ।
८. अज्ञानी .... में भी कर्म बांध सकते हैं।
९. पाँच इन्द्रिय के विषयों की प्राप्ति में जीव .... में द्वेष करता है उसमें दुःख मानता है।
१०. .... मनुष्य कदाचित धर्म मार्ग में आ जाय पर वहाँ धर्मटिक नहीं सकता।
११. आजतक समुद्र से अधिक .... में मानवी डूबे हैं।
१२. दीक्षा के दिन ही .... प्रभु को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई।
१३. सिद्ध हुए जीवों की जहाँ गति होती है वह.................... नामक स्थान है।
१४. जिन्होंने भी आत्म कल्याण साधा है .... को प्राणों से भी अधिक महत्व दिया है।
१५. तीर्थंकर परमात्मा द्वारा प्ररुपित मार्ग से विपरीत मार्ग में श्रद्धा हो वो .... है।
१६. मुनिसुव्रतस्वामी के शासन काल में वासुदेव .... हुए।
१७. तीर्थंकर परमात्मा का जन्म होता है तब .... में क्षणभर के लिये उजाला होता है।
१८. .... जीव भले ही स्वयं के कर्मानुसार पुण्य पाप को भोगते हैं, पर पुरुषार्थ द्वारा पाप को अटकाकर पुण्य की वृद्धि करते है।
१९. अपर महाविदेह में भरत विजय की चंपापुरी के .... राजा थे।
२०. .... वाला जीवन नंदन वन नहीं बनता जंगल बन जाता है।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो -

१. किस कर्म के उदय से नाभि से नीचे पैरों तक अशुभ अवयवो की प्राप्ति होती है ? १५
२. श्रावक का कौनसा गुण लोगों के जीवन में सद्मार्ग और सद्धर्म के बीज बो देता है ?
३. किस प्रभु के शासन में हरिषेण और जय चक्रवर्ती हुए ?
४. किस सूत्र से तीन लोक में रहे हुए सभी तीर्थों और सभी प्रतिमाओं को वंदन किया जाता है ?
५. संगम के भव में दिये हुए दान से किसकी ऋद्धि विश्व प्रसिद्ध हुई ?
६. एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीवों के प्राणों का विनाश करने से कौनसी क्रिया लगती है ?
७. दान के द्वारा परंपरा से क्या प्राप्त होता है ?
८. नरक के जीव कहाँ उत्पन्न होते हैं ?
९. सुनकर सद्शास्त्र का जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे क्या कहते हैं ?
१०. प्रल्हाद प्रतिवासुदेव किनके शासन में हुए ?
११. आरंभ समारंभ से जो क्रिया लगती है, उसे क्या कहते हैं ?
१२. संसार सागर में परिभ्रमण का मुख्य कारण क्या ?
१३. पूर्वभव में जीवदया का पालन न करने से ब्राह्मण पुत्र को दूसरे भव में विद्या प्राप्त होने के बावजूद क्या नहीं मिलता ?
१४. परमात्मा का शासन सुखी जीवन किसको कहते हैं ?
१५. गरुड यक्ष किस प्रभु के शासन रक्षक देव थे ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो -

१) जाई २) अयलं ३) दसगं ४) संपई ५) द्युत ६) नारय ७) मच्छिम ८) विकल ९) मणुस्स १०) पायालि **१०**
११) भविस्संति १२) परलोय १३) ठाणं १४) कष १५) ताई १६) नामधेयं १७) बहुमाणं १८) चक्कवट्टीणं
१९) सुरा २०) तिड्डा

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B
१) अंजना	१) लोकप्रियता
२) साधुजीवन	२) श्रीमुनिसुव्रतस्वामी
३) जगडुशा	३) सर्वविरती
४) अनुपमा देवी	४) दान
५) हास्य	५) कषाय
६) अव्रत	६) नोकषाय
७) मान	७) अशुभविहायोगति
८) महापद्म चक्रवर्ती	८) पंकप्रभा
९) कुंभ गणधर	९) श्रीअरनाथप्रभु
१०) ऊँट	१०) आश्रवतत्व

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. श्री मुनिसुव्रत प्रभु का छद्मस्थ काल कितना ?
२. पाप कितने प्रकार से भोगा जाता है ?
३. तमस्तमःप्रभा नरक की लंबाई कितनी ?
४. पाँच इन्द्रियों के विषय कितने ?
५. वज्रायुध चक्रवर्ती ने कितने पुत्रों के साथ दीक्षा ली ?
६. दर्शनावरणीय कर्म के भेद कितने ?
७. अरनाथ प्रभु का आयुष्य कितना था ?
८. अंतराय कर्म के भेद कितने ?
९. कषाय के कुल भेद कितने ?
१०. आश्रव तत्व के भेद कितने ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. पच्चक्खाण न करने से अविरति के कारण जो क्रिया लगे वह स्पृष्टिकी क्रिया है ।
२. जीवविचार का जो गहराई से विचार करने में आये तो जीवन में वैराग्य, भवनिर्वेद आदि गुणों की प्राप्ति होती है ।
३. श्री शांतिनाथ प्रभु मेघरथ राजा के भव में सम्यकत्व पाये ।
४. हाथ, पैर, मस्तक और कमर ये चार लक्षणयुक्त हों और उदर वगैरह लक्षण रहित हो वह कुब्ज संस्थान है ।
५. भय कषाय है ।
६. क्रूर मानवी सदा दूसरों के छिद्र देखने में ही लगा रहता है ।
७. नमोत्थुणं सूत्र में सभी जीवों को अभय देनेवालों को नमस्कार करने में आता है ।
८. चिलातिपुत्र ने उपशम, विवेक और संवर इन तीन शब्द का चिंतन करते करते आत्म कल्याण किया ।
९. श्री कुंथुनाथ प्रभु राजगृही नगरी में केवलज्ञान पाये ।
१०. जीवन जब तक क्रुरता से भरा हुआ है, तब तक सतत अशुभ ध्यान और अशुभ विचारों के भंवर में आत्मा फंसा हुआ है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. मेरे नीचे गिरते ही मेरे शरीर के नीचे कितने निर्दोष जीव कुचले जायेंगे ।
२. शरणागत का रक्षण करना अपना कर्तव्य बताया।
३. यदि यहाँ से कभी निकले तो मुझे सुजात को बताना ।
४. दुर्भग नामकर्म के उदय से जीव किसी को भी अच्छा न लगे, सभी को बुरा लगे ।
५. पत्थर के उपर कमल नहीं खिल सकता, वैसे ही क्रूरता से भरे हुए हृदय में धर्म कदापि नहीं हो सकता ।
६. जहाँ शरीर है वहाँ जाति-गति अनुसार मन वचन काया रुपी योग है ।
७. सांवत्सरिक दान देकर एक हजार राजाओं के साथ वैशाख वदि चौदस को दीक्षा ली ।
८. आम के वृक्ष को कोयल को आमंत्रित नहीं करना पडता, पर मंजरी लगने पर कोयल स्वयंमेव वृक्ष के पास दौडी आती है ।
९. दुर्गुणो की बादबाकी और सद्गुणों की सुवास मनुष्य को उच्चस्थान पर विराजित करती है ।
१०. कृष्ण और नीला अशुभ वर्ण है जिसकी प्राप्ति पाप से होती है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. प्रत्येक व्यक्ति महान नहीं बन सकता परन्तु सदाचारी जरुर बन सकता है ।
२. माया प्रपंच करने से, आरंभ समारंभ करने से तथा अजयणा से उठने बैठने से जो क्रिया लगे वो ।
३. कोई भी एक व्यसन ४) दान और शील ५) शांतिनाथ प्रभु के १२ भव

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com